

संकल्पों से प्रकृति परिवर्तन

• ब्रह्माकुमारी श्वेता, चरखी दादरी

आज विश्व का चहुँ ओर का वातावरण विषैला हो गया है। दूषित जल के रूप में, दूषित वायु के रूप में और अत्यधिक शोर के रूप में स्थूल विष पर्यावरण में घुल रहा है। पर्यावरणीय विष का एक सूक्ष्म रूप भी है जिसे मानसिक प्रदूषण या वैचारिक प्रदूषण (*Thought Pollution*) कहा जा सकता है, जो दिखाई तो नहीं देता लेकिन दिनों-दिन हमारे आसपास के वातावरण को तेज़ी से तनावयुक्त, बोझिल, एकाकी और असुरक्षित बनाता जा रहा है। यह ज़हर भी मानव ही घोल रहा है अपनी दूषित मानसिक तरंगों से। स्थूल प्रदूषण तो मानव की अंधाधुंध वैज्ञानिक प्रगति का परिणाम है परंतु यह सूक्ष्म प्रदूषण उसकी दिनों-दिन होती जा रही नैतिक गिरावट का परिणाम है।

क्यों दूर है मनुष्य

सच्ची सुख-शान्ति से?

एक समय ऐसा भी था जब विश्व के लोग विज्ञान की सर्वोच्च उपलब्धि प्राप्त होते हुए भी बहुत उच्च नैतिक चरित्र वाले थे। उस समय को आज भी सतयुग या स्वर्ण युग के नाम से याद किया जाता है। उस समय हर

मानव में मूल्य थे। प्रकृति मनुष्य की दासी थी परंतु आज मानव प्रकृति का दास बन गया है। निरंतर मशीनों के साथ ने मानव को मशीन बना दिया है। उसमें ना भावनाएँ रही हैं, ना संवेदनाएँ। दिलचस्प बात है कि आज मशीनों के मानवीकरण की बात हो रही है लेकिन मानव के मशीनीकरण की परवाह नहीं। एक तरफ विज्ञान ने मानव को ऐसे साधन दिए हैं कि कल तक कोई उनकी कल्पना भी नहीं कर सकता था परन्तु तस्वीर का दूसरा पहलू भी है, आज मानव के कुकृत्य भी अकल्पनीय हो गये हैं। एक तरफ हैं भौतिक उन्नति की ऊँचाइयाँ तो दूसरी तरफ हैं नैतिक पतन की निचाइयाँ। यही कारण है कि सब तरह के सुख-साधनों की भरपूरता के बावजूद मनुष्य सच्ची सुख-शान्ति से कोसों दूर है।

व्यर्थ जाती संकल्प शक्ति

इस नैतिक पतन का मुख्य कारण है मानव के दूषित विचार। आज इंसान के संकल्प बहुत तीव्र गति से तथा गलत दिशा में चलते हैं। मन के अंदर संकल्पों की बाढ़-सी आई हुई है। इसलिए वह ज़रा-सा काम करते ही थकावट का अनुभव करता है।

वास्तव में शारीरिक काम इतना नहीं थकाता जितना मन के संकल्पों की अधिक गति व्यक्ति को थका देती है। आज अगर व्यापक सर्वे किया जाये तो शारीरिक रोगियों की अपेक्षा मानसिक रोगी अधिक मिलेंगे। तनाव (*Stress*), चिन्ता (*Tension*), निराशा (*Depression*) जैसे मानसिक रोग तो आम हो गये हैं। एक ही विषय का बार-बार चिन्तन, अत्यधिक चिन्तन मनुष्य को रोगी बना देता है।

एक सेठ संत के पास गया, कहा, महाराज, मैं रोगी रहता हूँ। बी.पी. की शिकायत रहती है, रात को नींद नहीं आती। कुछ समाधान बताएँ। संत ने पूछा, अच्छा यह बताओ, कारोबार ठीक चल रहा है? सेठ ने कहा, और तो सब ठीक है, बस इन दिनों थोड़ी मंदी चल रही है। संत ने पूछा, परिवार में सुख-शान्ति है? सेठ ने कहा, और तो सब ठीक है, बस थोड़ा बहू-बेटे से खिंटपिट रहती है। संत ने पास रखा कमण्डल हाथ में उठाया और पूछा, अगर मैं इस कमण्डल को कुछ मिनट ऐसे ही पकड़े रखूँ तो क्या होगा? व्यक्ति ने कहा, कुछ नहीं। संत ने फिर पूछा, और अगर मैं इसे ऐसे ही